बार-बार गिरकर संभलने वाला ही होता है

सफल

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

स्वामी विवेकानंद का बहुत लोकप्रिय कथन है उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य को न पा लो। हममें से ज्यादातर लोगों ने इसे कभी न कभी जरूर पढ़ा होगा। इस बात से प्रेरणा लेने के बजाय हम एक या दो बार विफल होने पर प्रयास छोड़कर बैठ जाते हैं। हमारे दिमाग में यह इस तरह बैठ जाता है कि हम उस बारे में सोचना भी छोड़ देते हैं। इसके विपरीत अगर हम अपनी कोशिशें जारी रखें तो हमें सफल होने से कोई नहीं रोक सकता है। यही बात इस कहानी में भी बताई जा रही है।

एक प्रयोगशाला में एक रिसर्च बायोलॉजिस्ट ने एक बड़े से टैंक में शार्क मछली को रखा और फिर उसी टैंक में छोटी मछलियों को भी डाल दिया। शार्क ने छोटी मछलियों को खाना शुरू कर दिया और कुछ ही घंटों में सभी छोटी मछलियां शार्क का आहार बन चुकी थीं। हर बार यही होता। बायोलॉजिस्ट ने अब अपने प्रयोग में थोड़ा परिवर्तन किया और एक मजबूत फाइबर स्लाइड को उस टैंक में डाल कर टैंक को दो भागों में बांट दिया। एक भाग में शार्क और दूसरे भाग में छोटी मछलियों को रखा। आदतन शार्क ने छोटी मछलियों पर हमला करना चाहा तो वे उस स्लाइड से टकरा गईं। शार्क ने प्रयास नहीं छोड़ा और हमला करती रही। यह प्रयोग कुछ हफ्तों तक जारी रहा। शार्क ने हमला करना जारी रखा, लेकिन उसके प्रयास में लगातार कमी आती गई। फिर एक समय ऐसा आया कि शार्क ने यह मान लिया कि वह छोटी मछलियों को नहीं खा सकती। उसने प्रयास करना ही छोड़ दिया। बायोलॉजिस्ट ने अब फाइबर की स्लाइड को वहां से हटा दिया, लेकिन यह क्या, शार्क को तो इससे कोई फर्क हीं नहीं पड़ा। उसने यह मान लिया था कि एक दीवार है, एक अवरोध है, जिसे वह पार नहीं कर सकती। उसने प्रयास करना ही छोड़ दिया, अब छोटी मछलियां आराम से उसी टैंक में तैर रहीं थी और उसे शार्क से कोई खतरा भी नहीं था।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है

हममें से कई लोगों के साथ अक्सर ऐसा होता है। हम प्रयास करना ही छोड़ देते हैं। कोई रुकावट नहीं होने के बावजूद हमें ऐसा लगता है कि अवरोध है, जिसे पार नहीं किया जा सकता। यकीन मानिए, अगर किसी चीज को पाने के लिए हम ईमानदारी से लगातार प्रयास जारी रखते हैं, तो वह हमें जरूर मिलती है।

केले की उन्नत खेती कर योगेश कर रहे लाखों की कमाई

गुजरात के वडोदरा जिले के नंदेरीया नामक गांव में रहने वाले योगेश नरेंद्रभाई पुरोहित वहां केले की खेती करने वाले किसानों में जाने जाते हैं, जिनकी कुलभूमि 20 एकड़ हैं, जिसमें से वो 16 एकड़ जमीन पर केला समेत अन्य फसलों की खेती करते है और अन्य 4 एकड़ जमीन पर पेड़ों की बागानी के साथ-साथ पशुओं के लिए चारा की खेती करते हैं।

योगेश नरेंद्रभाई पुरोहित के मुताबिक पहले वह नौकरी करते थे, लेकिन अच्छी सैलरी न होने के वजह से वो नौकरी को छोड़कर खेती को ही रोजगार को साधन बना लिया, जिसमें उनको अब भारी मुनाफा भी हो रहा हैं। योगेश नरेंद्रभाई पुरोहित के मुताबिक, उन्होंने साल 2008 से ही जैविक खेती को अपनाया है। उन्होंने सिर्फ 2 बीघे से खेती की शुरुआत की, आज वो पूरी तरह से अपनी सभी जमीनों पर जैविक खेती करते हैं।

उन्नत किस्म की बीज

किसान योगेश नरेंद्रभाई पुरोहित के मुताबिक, इस समय जी-9 और विलियम्स केले की उन्नत किस्म का पौधा है। उनके साथ-साथ वडोदरा जिले के ज्यादातर किसान केले की इन्हीं किस्मों की खेती कर रहे हैं।

खेती करने का समय

आमतर पर केले की खेती दो सीजन मई-जून, अगस्त-सितंबर में की जाती है, जिसमें किसान योगेश नरेंद्रभाई पुरोहित अगस्त-सितंबर वाले सीजन में खेती करते हैं।

एक एकड़ खेती में लागत

किसान योगेश नरेंद्रभाई पुरोहित के मुताबिक, जी-9 या विलियम्स केले की एक एकड़ में 1400 पौधों की बुआई होती है, जिनमें से एक पौधे की कीमत नर्सरी से लेने पर 14 रुपए पड़ता है। ऐसे में 1 एकड़ जमीन पर केले की खेती करने पर पौधों की कीमत में लागत औसतन 20000 रुपए आती है। किसान योगेश नरेंद्रभाई पुरोहित के मुताबिक, केले की केमिकल विधि से खेती करने पर एक एकड़ में बीज के अलावा 90000 से 1000 00 रुपए लागत

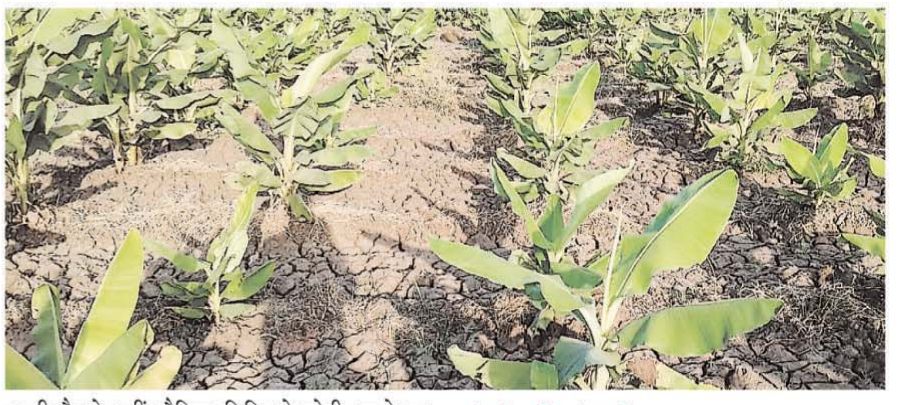

आती है तो वहीं जैविक विधि से खेती करने पर 50000 से 60000 तक औसतन लागत आती हैं।

मुनाफा

किसान योगेश नरेंद्रभाई पुरोहित के मुताबिक, केले के एक पौधे से औसतन 1.5 (30 किलों) कैरेट फल मिल जाता है, जिसकी बाजार में औसतन कीमत 250 से 300 रुपए कैरट होती है। कभी-कभी बाजार में मंदी के वजह से इसकी कीमत 100 रुपए कैरेट भी हो जाता है।

खेती की जमीन

केले की की खेती के लिए ऐसी जगह चुने जहां जल निकासी हों, क्योंकि वैसे तो केले को बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन अगर जल निकासी सही न हो तो केले की जड़े सड़ने लगती हैं और पौधे सूखकर जमीन पर गिरने लगते है।

खेती की तैयारी

केले की खेती करने से पहले खेती करने वाले जमीन पर मई के महीने में गहरी जुताई वाले हल से 3 से 4 बार गहरी जुताई करके जमीन को फसल लगाने लायक तैयार कर लिया जाता हैं। उसके बाद से खेत को समतल कर लिया जाता हैं, ताकि खेत के किसी भी हिस्से में अधिक पानी का जमाव न हों, क्योंकि केले की फसल को बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन अगर जल निकासी सही से न हो तो केले की जड़े सड़ने लगती हैं

पौधों की रोपाई

केला के खेती के दौरान केले की बड़े पौधे की रोपाई नहीं करके केले के पुत्तियों की रोपाई की जाती है, पुत्तियो का रोपण जून माह तक किया जाता है। इन पुत्तियों की पत्तियां काटकर रोपाई तैयार गड्ढो में की जाती हैं। पुत्तियों की रोपाई के बाद खेत में पानी छोड़ा जाता है, ताकि सभी पुत्तियों की जड़े जमीन को सही ढंग से पकड़ ले और उखड़े नहीं।

सिंचाई

केले की फसल की सिंचाई जिस जगह पर खेती की गई है, उस पर और मौसम पर निर्भर करती हैं। अगर वर्षा 3-4 दिन में नहीं हो रही है तो फसल की सिंचाई कर देनी चाहिए। ठंडी में सिचाई 10-12 दिन और गर्मी में 6-7 दिन पर करनी चाहिए.

निदाई - गुड़ाई

खेत की जरूरत के मुताबिक उसमें से जो बेकार या हानिकारक पौधे हैं, उन्हें खेत से बाहर निकल देना चाहिए, जिससे पौधे को हवा और धूप मिले सके और पौधा हरा-भरा रहे।

केले में लगने वाले रोग

केले की फसल में कई तरह के रोग लगते हैं, जिनमें से जड़ गलन, पर्ण चित्ती या लीफ स्पॉट, पत्ती गुच्छा रोग, एन्थ्रक्नोज एवं तनागलन हर्टराट आदि प्रमुख रोग है।